GOVT. OF INDIA- RNI NO. UPBIL/2014/56766
UGC Approved Care Listed Journal

ISSN 2348-2397

Special Issue

शोध सरिता

An International Multidisciplinary Quarterly
Bilingual Peer Reviewed Refereed Research Journal

• Vol. 7 • Issue 25 • January to March 2020

Editor in Chief
Dr. Vinay Kumar Sharma
D. Litt. - Gold Medalist

sanchar
Educational & Research Foundation

Scanned by CamScanner

SPECIAL ISSUE

Govt. of India- RNI No. : UPBIL/2014/56766

APPROVED UGC CARE

ISSN No. 2348-2397

JOURNAL OF
ARTS, HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

शोध सरिता

• Vol. 7 • Issue 25 • January - March 2020

संपादक मण्डल

डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ. अर्जुन चव्हाण
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, महाराष्ट्र

डॉ. कुमुद शर्मा
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. सुधीर प्रताप सिंह
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. अब्दुल अलीम
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

डॉ. गिरीश पंत
जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. जय शंकर बाबू
पाण्डिचेरी विश्वविद्यालय, पाण्डिचेरी

डॉ. आशीष श्रीवास्तव
विश्व भारती विश्वविद्यालय, शांति निकेतन पश्चिम बंगाल

डॉ. अरूण होता
पश्चिमवंग विश्वविद्यालय, बारासात, कोलकाता

डॉ. भारत नामदेव भोसले
प्रधानाचार्य, प्रा. संभाजीराव कदम महाविद्यालय देऊर, महाराष्ट्र

डॉ. शिवाजी उत्तम चवरे
अध्यक्ष हिंदी विभाग, प्रा. संभाजीराव कदम महाविद्यालय देऊर, महाराष्ट्र

प्रधान संपादक

डॉ. विनय कुमार शर्मा
अध्यक्ष
संचार एजुकेशनल एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन, लखनऊ

संचार एजुकेशनल एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन, लखनऊ (उ0प्र0), भारत द्वारा प्रकाशित

Scanned by CamScanner

PUBLISHER
Sanchar Educational & Research Foundation, Lucknow (U.P.) INDIA

PRINTER
Neelam Printers, Press, 41/381, Narhi,
Lucknow, U.P. - 226001 (U.P.)

SUBSCRIPTION / MEMBERSHIP FEE

Single Copy (Special Order)
Individual / Institutional — **Rs. 300/-**

FOR INDIANS

One Year	Rs. 1000.00- (with Postal Charges)
Five Years	Rs. 5,000.00- (with Postal Charges)
Life Time Membership	Rs. 10,000.00- (with Postal Charges)

FOR FOREIGNERS

Single Copy	US$60.00-
One year	US$150.00-

SPECIAL

All the Cheques/Bank Drafts should be sent in the name of the **SHODH SARITA**, payable at Lucknow. All correspondence in this regard should be sent by **Speed Post** to the **Managing Editor, SHODH SARITA**

CHIEF EDITORIAL OFFICE
Dr. Vinay Kumar Sharma
M.A., Ph.d., D.Litt. - Gold Medalist
Awarded by the President of India

Editor in Chief - SHODH SARITA
448 /119/76, KALYANPURI THAKURGANJ, CHOWK, LUCKNOW -226003 U.P.,
Cell.: 09415578129, 09161456922
E-mail : serfoundation123@gmail.com

Publisher, Printer & Editor :-
Dr. Vinay Kumar Sharma Published at 448 /119/76, Kalyanpuri Thakurganj, Chowk, Lucknow-226003 U.P. and printed by Neelam Printers, Press, 41/381, Narhi, Lucknow, U.P. - 226001 (U.P.)

- The Views expressed in the articles printed in this Journal are the personal views of the Authors. It is not essential for the Shodh Sarita Patrika or its Editorial Board to be in agreement with the views of Authors.
- Any material published in this Journal cannot be reprinted or reproduced without the written permission of the editor of the Journal.
- Printing, Editing, selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
- All disputes will be subject to Lucknow jurisdiction only.

Scanned by CamScanner

33.	राष्ट्रीय चेतना की सुलगती अभिव्यक्ति दक्खिनी काव्य	डॉ. हाशमबेग मिर्झा जावेद खलील पटेल	109
34.	नागार्जुन के काव्य में जनवादी चेतना	प्रा. डॉ. छाया शंकर माळी	113
35.	समकालीन प्रमुख हिंदी गजलकारों की रचनाओं में जनचेतना के विभिन्न आयाम	प्रा. डॉ. संदीप जोतीराम किर्दत	115
36.	'धूमिल' के काव्य में जनचेतना	प्रा. डॉ. सौ. सविता शिवलिंग मेनकुदळे	118
37.	हिंदी तथा मराठी कविता का समकालीन परिदृश्य	डॉ0 भाऊसाहेब नवनाथ नवले	121
38.	चंद्रसेन 'विराट' की ग़ज़लों में व्यक्त आम आदमी	डॉ. शौकत अली सय्यद	125
39.	मायानंद मिश्र के कथा साहित्य में आंचलिकता एवं सामाजिक जनचेतना का स्वर	डॉ. रंजीत कुमार	128
40.	डॉ. महीप सिंह के उपन्यास में पारिवारिक, राजनीतिक एवं सामाजिक चेतना	डॉ. सुनीता साह	133
41.	सुशिला टाकभौरे की 'सिलिया' कहानी में दलित चेतना	सुनंदा सोपानराव मोहिते	138
42.	समाकलीन हिंदी कविता : जनवादी संवेदना के नए स्वर	डॉ0 पंडित बन्ने	141
43.	जनवादीधारा का सशक्त कवि – नागार्जुन	डॉ. सुमा.टी.रोडन्नवर	144
44.	शम्बूक : आधुनिक विचारों का वाहक	प्रा. सिद्धाराम पाटील	146
45.	इक्कीसवी सदी की हिंदी कहानी में धार्मिक चेतना	प्रा. सुधाकर इंडी	149
46.	हिंदी कविता में दलित चेतना के स्वर	डॉ. दीपक रामा तुपे	152
47.	चंद्रकांत देवताले की कविताओं में चित्रित मजदूरों की पीडा	डॉ. अशोक शेलार	154
48.	वेदनाओं का सफर : अल्मा कबूतरी	डॉ प्रकाश कोपार्डे	158
49.	मार्कण्डेय की कहानियों में ग्रामीण चेतना	प्रा० मनोज कांबले	161
50.	ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में दलित चेतना	प्रा० उमेश बेलंके	166
51.	'कबीरा खड़ा बाजार में' नाटक मे संघर्षशील चेतना	प्रा. डॉ. बिराजदार गंगाधर धुळप्पा	170
52.	समकालीन हिंदी उपन्यासों में नारी चेतना	डॉ. अनु पाण्डेय	172
53.	समकालीन भारतीय समाज में उदय प्रकाश की कहानियाँ	प्रा. युवराज राजाराम मुळये	175
54.	समकालीन काव्य में युग चेतना	प्रा. डॉ. विद्या शशीशेखर शिंदे	179
55.	नागार्जुन के कविता में जनपक्षधरता	डॉ. गुरुदत्ता	183
56.	प्रगतिशील साहित्य में दलित विमर्श : एक मूल्यांकन	डॉ. आबासाहेब राठोड	186
57.	ज़हीर कुरेशी के ग़ज़लों में मानवबोध	डॉ. प्रिया ए.	190
58.	समकालीन हिन्दी कविता के संदर्भ में एक विवेचन	डॉ. रमेश टी. बावनथडे	193
59.	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में जनचेतना के विविध आयाम	लक्ष्मी बाकेलाल यादव	196
60.	आधुनिक दांपत्य जीवन का यथार्थ : बिना दीवारों के घर	प्रा. एस. के आतार	201
61.	डॉ. रामदरश मिश्र के काव्य में चित्रित प्रगतिवादी चेतना	डॉ. जयलक्ष्मी एफ. पाटील	203
62.	निराला के काव्य में जनचेतना	प्रा. डॉ. रशीद तहसिलदार	206
63.	एक सड़क सत्तावन गलियाँ : नारी शोषण	डॉ. मा. ना. गायकवाड	209
64.	'बाबा नागार्जुन' की उपन्यासों में जनचेतना के विविध आयाम	प्रा. कैलास बबन माने	211
65.	समकालीन हिन्दी नाटकों में सामाजिक चेतना	प्रा. डॉ.अनिता वेताळ /अंत्रे	214
66.	बदलता भारतीय परिदृश्य : संत कबीर और उनका साहित्य	डॉ. संजय नाईनवाड	217
67.	स्त्री–चेतना का बदलता परिदृश्य : दलित उपन्यासों के परिप्रेक्ष्य में	डॉ. उमा देवी	220
68.	हिंदी और मराठी दलित आत्मकथाओ में अभिव्यक्त जीवन संघर्ष का तुलनात्मक अध्ययन	पार्वती भगवानराव देशपांडे	224
69.	आदिवासी साहित्य 'जारवा औरत के बहाने ……'	डॉ सुनिता मच्छिंद्र मोटे	227

Scanned by CamScanner

ISSN - 2348-2397
APPROVED UGC CARE

SHODH SARITA

SHODH SARITA
Vol. 7, Issue 25, January-March, 2020
Page Nos. 152-153

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

हिंदी कविता में दलित चेतना के स्वर

❑ डॉ. दीपक रामा तुपे*

शोध सारांश

बीसवीं सदी में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में आए परिवर्तन से दलितों की अस्मिता जाग उठी और दलितों में शिक्षा का प्रचार–प्रसार हुआ। शिक्षा के कारण ही दलित चेतना के स्वर मुकरित होने लगे। यही स्वर दलित कविता का केंद्रीय विशय रहा है। जातिविहीन, धर्मविहीन, वर्गविहीन, वर्णविहीन समाज रचना के लिए दलित कवियों की लेखनी के धधकते स्वर दलित समाज में चेतना पैदा करते हैं। दलित कविता में सवर्ण मानसिकतावादी द्वारा किए गए अत्याचार का विरोध दिखाई देता है, वर्ण एवं वर्गवादी व्यवस्था के खिलाफ आक्रोश का स्वर दिखाई देता है। आज भी समाज में धर्मभेद, जातिभेद, वर्गभेद, वर्णभेद की दीवारें मजबूत है। इसी कारण समाज में छुआछूत की प्रथा जारी है। छुआछूत से धर्मभ्रष्ट हो जाता है यही मनुवादी परंपरा समाज में जारी है।

आज उच्च वर्ग मानव–मानव में भेद कर सकता है, मगर प्रकृति प्रदत्त हवा में भेद करता है मगर दलित रचनाकार अनिता भारती की 'रोको ब्राह्मण' कविता ब्राह्मणों को दलितों से छूकर आने वाली हवा रोकने की चेतावनी देती है–

'रोको ब्राह्मण
यदि तुम रोक सको तो
उस हवा को जो
मुझे छूकर
तुम तक आ रही है
जिसमें मेरे द्वारा छोड़ी गई
साँस भी
घुल मिल गई है
तुम्हारा धर्म भ्रष्ट करने।'[1]

उक्त कथन दलित जनता की विदारक पीड़ा की जीवंत अभिव्यक्ति है। मनुष्य मानव–मानव के बीच भेद तो कर सकता है, मगर प्रकृति प्रदत्त संसाधनों में भेदभाव नहीं कर सकता। प्रस्तुत कथन सवर्ण की धर्मभेदी मानसिकता का पर्दाफाश करता है। जन्मजात वह सिर्फ मनुष्य था, मगर आज धर्म, वर्ण, जाति, लिंग और भाषा भेदभाव करने लगा है। ऐसी स्थिति में वह मानवता को भूल गया है। कर्मशील भारती की 'जाति से तौबा' कविता में इसी स्थिति का प्रमाण मिलता है, जैसे–

'वह मनुष्य था
निरा कोरा मनुष्य।
वह नहीं जानता था
कोई धर्म/वर्ण/जाति/लिंग
भाषा और विभेद।
अब उसे सीखनी थी मानवता।
सीखना था
मनुष्य होने का सार्थक अर्थ।'2

स्पष्ट है कि आज हर आदमी मनुष्य बनने के बजाए धर्म, वर्ण, जाति, लिंग और भाषा विभेदी शड्‌यंत्र करने लगा है। दो विश्वयुद्ध की भयावहता से परिचित मनुष्य युद्ध नहीं, बुद्ध यानी शांति चाहता है। विनाश नहीं, सृजन की चाहता है। रजनी तिलक की 'बुद्ध चाहिए युद्ध नहीं' कविता इसी स्थिति का दस्तावेज प्रस्तुत करती है, जैसे –

'हम जंग नहीं चाहते,
जीना चाहते हैं
हम विनाश नहीं सृजन चाहते हैं
हम युद्ध न हीं बुद्ध चाहते हैं।'3

स्पष्ट है कि गौतम बुद्ध कभी जंग नहीं, हमेशा शांति से जीवन जीने की चाहत रखी। उन्होंने समग्र विश्व को मानवता एवं शांति का संदेश दिया। दलितों को मानवता के अधिकार दिलाने में डॉ. अम्बेडकर का मौलिक योगदान रहा है। उन्होंने दलितों को 'शिक्षित बनो, संगठित बनो और संघर्ष करो' का संदेश दिया। संघर्ष करने के लिए शेर की आवश्यकता होती है। इसलिए डॉ. अम्बेडकर दलितों को बकरी नहीं शेर बनने का संदेश देते हैं। इसका प्रमाण सोहनपाल सुमनाक्षर 'बाबा ने कहा था' कविता में मिलता है। स्वयं कवि के शब्दों –

'बलि
भेड़–बकरियों की दी जाती है

*सहायक प्राध्यापक – हिंदी विभाग, विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त)

Scanned by CamScanner

कभी शेर की नहीं,
इसलिए/बाबा ने कहा था–
'बेटो, शेर बनो,
भेड़–बकरी नहीं।
शेर बनोगे तो तुमसे डरेगा जमाना,
फिर तुम पा सको,
धन, शक्ति, सम्मान, सत्ता और
लक्ष्य जिस पर,
तुम्हें है जाना।''4

स्पष्ट है कि डॉ. अम्बेडकर ने दलितों को बकरी नहीं बल्कि शेर बनने की सलाह दी क्योंकि बकरी की हमेशा बलि दी जाती है, मगर शेर की बलि नहीं दी जाती क्योंकि शेर ताकतवर होता है। दुनिया में जो ताकतवर है उसे ही अन्य लोग डरते हैं और समाज में उन्हीं को ही सत्ता, धन, सम्मान मिलता है। डॉ. अम्बेडकर ने दलितों को स्वतंत्रता, समता, बंधुता की राह दिखाई। जब डॉ. अम्बेडकर हजारों दलितों के साथ धर्मांतरण किया उसी दिन दलितों ने बंधुता, स्वतंत्रता, समता का अर्थ सही मायने में जान लिया। इसका प्रमाण हेमलता महीश्वर की 'सावधान' कविता में मिलता है। स्वयं कवयित्री के शब्दों में–

'जाना था अर्थ
बंधुता का जब
धर्मांतरण के दिन
भरी सभा में
खचाखच
निकाल फेंकी थी मैंने
अपने हाथों से चूड़ी
गले से मंगलसूत्र
मैं तुम्हारी
और तुम मेरे
हो गए हमराह
और निकल चली है
समता, स्वतंत्रता
बंधुता की राह।'5

स्पष्ट है कि डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर ने हिंदू धर्म त्यागकर बौद्ध धर्म का स्वीकार किया और धर्मांतरण के माध्यम से दलितों को स्वतंत्रता, बंधुता और समता की राह दिखाई। इतना ही नहीं, उन्हें उनके मानवी अधिकार दिए। यह अधिकार पहले उच्चवर्गीय समाज तक सीमित थे, जिसका खामियाजा दलित समाज को भुगतना पड़ता था। उच्चवर्गीय समाज दलितों को उनके अधिकारों से वंचित रखता है, ज्ञान से दूर रखता है, अनपढ़ और मुर्ख बनाकर उनकी धन–संपत्ति हड़प करता है। उन्हें शस्त्र–अस्त्र पढ़ने नहीं दिया जाता और दीन–हीन जीवन जीने के लिए विवश किया जाता था। यदि ऐसा ही व्यवहार उच्च वर्ग के साथ किया तो तुम्हें कैसा लगेगा? यही सवाल कवि एन. आर. सागर अपनी 'तब तुम्हें कैसा लगेगा?' कविता के माध्यम से उपस्थित कराते हैं–

'यदि
तुम्हें ज्ञान के आलोक से दूर
अनपढ़–मुर्ख बनाकर रखा जाए,
धन–संपत्ति से कर दिया जाए वंचित,
छीन लिए जाएँ अस्त्र–शस्त्र
और विवश किया जाए
हीन–दीन,
अधिकार–विहीन जीवन जीने को
तब तुम्हें कैसा लगेगा?'6

सार यह कि जिन अधिकारों से सवर्ण समाज ने दलितों को सदियों तक उनके मानवीय अधिकारों से वंचित रखा। अगर यही बरताव दलितों ने सवर्ण समाज के साथ किया और उन्हें उनके अधिकारों से वंचित रखा तो कैसा लगेगा ? यही सवाल कवि एन. आर. सागर अपनी 'तब तुम्हें कैसा लगेगा?' कविता के माध्यम से करते हैं और सवर्ण समाज को सोचने के लिए अंतरमुख करते हैं।

निष्कर्ष यह कि दलित रचनाकारों ने अपने काव्य में दलित समाज की विदारक पीड़ा का जीवंत चित्रण किया है। उन्होंने दलितों की स्वानुभूत पीड़ा की प्रामाणिक अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है। साथ ही उन्होंने सामाजिक सरोकारों के प्रति गहन प्रतिबद्धता के लिए दलित चेतना के स्वर मुकरित किए हुए हैं। दलितों की अनुभूति यथार्थ अनुभूति है। यह अनुभूति स्वतंत्रता, समता, बंधुता की मांग करती है और अपने अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा देती है। डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर ने दलितों को अपने अधिकार दिलाने के लिए 'शिक्षित बनो, संगठित बनो और संघर्ष करो' का संदेश दिया। इसी कारण दलित रचनाकारों के जनस्वर जाति व्यवस्था तथा धर्म व्यवस्था की बुनियाद को हिला देते हैं।

सन्दर्भ :–

1. संपादक प्रीति सागर, हिंदी दलित साहित्य संचयिता, पृ. 28 (राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि., 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली – 110 002, पहला संस्करण : 2015)
2. वही, 46
3. वही, पृ. 85
4. वही, पृ. 94–95
5. वही, पृ. 104
6. वही, पृ. 35

Scanned by CamScanner